AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (3), July-September 2026 ISSN: 3048-7951

भारतीय शिक्षा में शिक्षण-शास्त्रीय उपागम का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ संजय कुमार गुप्ता[1]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.22770703

Review: 29/07/2026 Acceptance: 02/08/2026 Publication: 15/09/2026

सार:- प्रस्तुत आलेख भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल कल से औपनिवेशिक काल होते हुए आधुनिक भारतीय शिक्षा तक शिक्षण शास्त्रीय उपागम एवं शिक्षण तकनीक में हुए परिवर्तनों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेख में गुरुकुल की समग्र अनुभावात्मक एवं जीवनोपयोगी, औपनिवेशिक शिक्षा की शिक्षक केंद्रित एवं अंक आधारित परीक्षा परिणाम केंद्रित प्रवृत्ति तथा आधुनिक भारतीय शिक्षा की बाल केंद्रित एवं अनुभवात्मक अधिगम की प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया है। पॉल फ्रेरे के बैंकिंग कांसेप्ट ऑफ़ एजूकेशन के माध्यम से निष्क्रिय एवं सूचना केंद्रित अधिगम की सीमाओं को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा अपेक्षित शिक्षण शास्त्रीय परिवर्तन तथा शिक्षार्थी केंद्रित अनुभवात्मक एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रतिफल को रेखांकित किया गया है।अंतत लेख यह विवेचित करता है,कि कक्षा में अपनाया जाने वाला शिक्षण शास्त्रीय उपागम किस प्रकार भावी नागरिक एवं राष्ट्र निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

प्रमुख बिंदु:- शिक्षा शास्त्रीय उपागम, गुरुकुल शिक्षा, औपनिवेशिक शिक्षा, बैंकिंग कॉन्सेप्ट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं अनुभवात्मक अधिगम।

उद्देश्य- शिक्षा समाज के दर्शन सामाजिक सांस्कृतिक संरचना एवं भविष्य की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जो प्राचीन भारतीय गुरुकुल परंपरा औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था तथा आधुनिक विद्यालय शिक्षा के विभिन्न चरणों से होकर गुजारी है। यह विभिन्न चरण शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधियों अधिगम की प्रकृति, शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भूमिका तथा मूल्यांकन की अवधारणा को स्पष्ट परिवर्तन के रूप में परिलक्षित होती है।

भारत का भाग्य आज उसकी कक्षाओं में आकर ले रहा है 'कोठारी आयोग की यह प्रसिद्ध उक्ति इस बात को स्पष्ट करती है कि शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करने की प्रक्रिया तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक एवं मानवीय भविष्य के निर्माण का सशक्त माध्यम है। शिक्षक द्वारा कक्षा में अपनी जाने वाली शिक्षण विधियाँ केवल यह निश्चित नहीं करती की शिक्षार्थी क्या सीखेगा बल्कि यह भी निर्धारित करती है कि वह किस प्रकार के प्रश्न करेगा समस्याओं पर कैसे चिंतन करेगा और समाधान की

[1] डॉ संजय कुमार गुप्ता सेवानिवृत्ति व्याख्याता, डाइट कुमारबाग, पश्चिम चंपारण, बिहार, इंडिया|

ओर किस तरह बढेगा, अपने व्यक्तित्व का निर्माण कैसे करेगा और समाज में अपनी भूमिका कैसे निभाएगा। इस प्रकार शिक्षण शास्त्रीय उपागम एक ओर पाठ्यक्रम की सार्थकता निर्धारित करता है तो दूसरी ओर मूल्यांकन पद्धति को भी परिभाषित करता है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल कल से औपनिवेशिक काल और आधुनिक शिक्षा तक शिक्षण शास्त्रीय उपागम एवं शिक्षण तकनीक में हुए परिवर्तनों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया गया हैः गुरुकुल की समग्र अनुभवात्मक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा का स्वरूप, औपनिवेशिक शिक्षा की शिक्षक केंद्रिता एवं अंक आधारित परीक्षा परिणाम केंद्रित प्रवृत्ति, आधुनिक भारतीय शिक्षा की बाल केंद्रित एवं अनुभवात्मक अधिगम की प्रवृत्ति पॉल फ्रेरे के बैंकिंग कॉन्सेप्ट आफ एजुकेशन के माध्यम से निष्क्रिय एवं सूचना केंद्रित अधिगम की सीमाओं की पहचान तथा राष्ट्रीय शिक्षा एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रतिफल का रेखांकन है।

प्राचीन भारतीय गुरुकुल का उद्देश्य शिक्षार्थी का समग्र विकास, चरित्र निर्माण, जीवनोपयोगी ज्ञान, तार्किक विवेक एवं व्यक्तित्व निर्माण था। शिक्षण मुख्यतः अनुभव, संवाद, अनुकरण, तर्क -विवेचना एवं दैनिक जीवन की गतिविधियों से सीधा जुड़ा हुआ था। प्राचीन गुरुकुल में सीखना मुख्यतः गुरु- शिष्य के प्रत्यक्ष संवाद, अनुकरण, श्रवण, प्रश्नोत्तर आदि द्वारा तथा अर्जित ज्ञान को दैनिक जीवन में अभ्यास के माध्यम से अनुभव प्राप्त करने की परंपरा रही है। गुरु की भूमिका ज्ञान प्रदान करने के अतिरिक्त मार्गदर्शक एवं संसाधन उपलब्ध कराने वाले सहायक की भी होती थी। इस प्रकार अधिगम अपेक्षाकृत व्यक्तिगत, संवादात्मक, विश्लेषणात्मक, अनुभवात्मक तथा जीवन मूल्यों से जुड़ा हुआ था।

मध्यकाल में मकतब और मदरसो के माध्यम से शिक्षा परंपरा जारी रही, जहां शिक्षण में शिक्षक की व्याख्या, मौखिक पाठ, पाठ का वाचन एवं पुनरावृत्ति स्मरण तथा लिखित अभ्यास को महत्वपूर्ण स्थान मिला। इस काल में शिक्षा गुरुकुल के व्यक्तिगत एवं जीवन सन्निकट परंपरा से आगे बढ़कर संस्थागत पाठ आधारित एवं शिक्षक निर्देशित अधिगम का स्वरूप धारण करने लगी। यद्यपि मौखिक संवाद,व्यक्तिगत गुरु -शिष्य संबंध और शास्त्रार्थ जैसी परंपराएं विभिन्न रूपों में प्रचलित रही।

औपनिवेशिक काल में शिक्षा के संस्थागत एवं औपचारिक स्वरूप का विकास हुआ जो मुख्यतः औपनिवेशिक उद्देश्यों, निर्धारित पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक केंद्रित शिक्षण केंद्रीकृत तथा अंक आधारित मूल्यांकन एवं प्रमाण पत्र को अधिक महत्व देता था। इस काल में ज्ञान के संप्रेषण और अधिगम की प्रकृति में उल्लेखनीय परिवर्तन आया -- गुरु शिष्य के व्यक्तिगत संवाद अनुकरण और प्रत्यक्ष अनुभव के स्थान पर शिक्षक द्वारा सूचना प्रदान करना, पाठ्य पुस्तक के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करना एवं पाठ स्मरण कर परीक्षा में पुनः प्रस्तुत करना अधिक प्रमुख हो गया।

शिक्षक स्वयं को ज्ञान का प्रमुख स्रोत एवं शिक्षार्थी को उसका निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मानने लगा। इस प्रकार सीखने में संवाद विश्लेषण एवं व्यक्तिगत अनुभव के स्थान पर स्मरण और पुणः प्रस्तुतीकरण की ओर एक

महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न शिक्षा आयोगों ने बाल केंद्रित गतिविधि आधारित एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण को कक्षा में उतरने की बात की परंतु व्यवहार में औपनिवेशिक विरासत के प्रभाववश सूचना संरक्षण एवं परीक्षा उन्मुख अधिगम की प्रवृत्ति कक्षा में बनी रही। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 एवं 1986 तथा संशोधित 1992 के माध्यम से अपेक्षित परिवर्तन किए गए, किंतु व्यवहार में परीक्षा केंद्रित एवं ज्ञान के पुनरुत्पादन की प्रवृत्ति विद्यमान रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ऐसे ऐतिहासिक परिवर्तन को नई दिशा प्रदान करती है और अनुभवात्मक, संवादात्मक, अन्वेषणात्मक, दक्षता आधारित,बहु विषयक तथा शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण अधिगम की अपेक्षा करती है। इस नीति का बल इस बात पर है कि शिक्षार्थी कैसे सीखता है, कैसे सोचता है और अपने अर्जित ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में किस प्रकार प्रयोग करता है, यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि वह क्या और कितना सीखता है।

पॉल फ्रेरे ने अपने बैंकिंग कॉन्सेप्ट ऑफ एजुकेशन के माध्यम से पारंपरिक शिक्षण व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहा कि इस व्यवस्था में विद्यार्थी ज्ञान का सक्रिय निर्माता ना होकर शिक्षक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचनाओं का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता बन जाता है। फ्रेरे का यह दृष्टिकोण भारतीय विद्यालयी शिक्षा में ज्ञान के संप्रेषण और अधिगम के प्रवृत्तियों को समझने हेतु एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक ढांचा प्रदान करता है। उनके अनुसार शिक्षक स्वयं को ज्ञान का एकमात्र स्वामी मानता है और विद्यार्थी एक निष्क्रिय खाते के समान होता है, जिसमें शिक्षक अपने ज्ञान रूपी सूचनाओं को जमा करता है, शिक्षार्थी उन जमा की गई सूचनाओं को स्मरण करता है और आवश्यकता पड़ने पर विशेषतः परीक्षा में उन्हें पुनःप्रस्तुत करता है।

भारतीय संदर्भ में यह अवधारणा और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि शिक्षक सूचना प्रदान करने पर तथा शिक्षार्थी तथ्यों को समझने की अपेक्षा याद करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि यहां मूल्यांकन मुख्यतः स्मरण आधारित एवं तथ्यों के पुनरूत्पादन के समानुपाती होता है-- परिणामस्वरुप इस प्रकार भारतीय शिक्षा क्रमबद्ध सतत सीखने की प्रक्रिया के स्थान पर अंकों की प्रतिस्पर्धा मात्र बनकर रह जाती है इसके विपरीत फ्रेरे संवाद, समस्या समाधान एवं आलोचनात्मक चिंतन आधारित शिक्षण प्रक्रिया की वकालत करते हैं।

जॉन डीवी का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है कि शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं बल्कि शिक्षा स्वयं जीवन है। अर्थात शिक्षा केवल परीक्षा के लिए तैयार होना या भविष्य में नौकरी प्राप्त करना मात्र नहीं है बल्कि यह सीखने और अनुभव की एक निरंतर प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यंत चलती रहती है। महात्मा गांधी का मानना था कि सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का संतुलित विकास करें। इसके लिए आवश्यक है कि मस्तिष्क, हृदय और हाथों के बीच उचित समन्वय हो। एक आदर्श समाज के निर्माण हेतु मस्तिष्क- सोचने समझने विश्लेषण एवं निर्णय करने के लिए, हृदय- करुणा, प्रेम अहिंसा और संवेदना के लिए तथा हाथ -श्रम कौशल और रचनात्मकता के लिए इन तीनों का एक साथ मिलकर कार्य करना अत्यंत अनिवार्य है।

रविंद्रनाथ टैगोर ने स्वतंत्र चिंतन प्रकृति और रचनात्मक अनुभव को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार माना है। उनकी अवधारणा के अनुसार ऐसी कक्षा या वातावरण जहां शिक्षार्थी स्वतंत्र रूप से प्रश्न पूछ सके, प्रयोग कर सके, गलती कर सके, अनुभवों पर वाद-विवाद कर सके और सीखने का आनंद अनुभव कर सके तभी आनंदपूर्ण अधिगम की अवधारणा चरितार्थ हो सकती है। इन विचारों को संरचना वादी दृष्टिकोण से भी जोड़ कर देखा जा सकता है। इसके अनुसार शिक्षार्थी सामाजिक एवं नई परिस्थितियों के साथ सक्रिय अंतः क्रिया से प्राप्त अनुभव के आधार पर अपने पूर्व अनुभव में अपेक्षित परिवर्तन लाते हुए ज्ञान का स्वयं निर्माण करता है। इस दृष्टि से शिक्षक का कार्य केवल सूचना देना मात्रा नहीं है बल्कि ऐसे लर्निंग स्टीमुलस का निर्माण करना है जिसे देखकर शिक्षार्थी प्रश्न पूछे, उस पर विचार करें, सहपाठियों से उसे पर चर्चा करें किसी निष्कर्ष तक पहुंचे प्राप्त निष्कर्ष का दैनिक जीवन में अनुप्रयोग कर अनुभव प्राप्त करें तथा उस अनुभव के आधार पर अपने पूर्व ज्ञान को पुनर्गठित कर सके। इस प्रक्रिया में गलती भी सीखने के लिए एक फीडबैक के स्रोत के रूप में कार्य करती है।

जॉन डीवी, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर, पॉल फ्रेरे एवं संरचनावादी दृष्टिकोण- यह सभी एक ही दिशा की ओर संकेत करते हैं शिक्षार्थी को सूचना के निष्क्रिय भंडार की जगह सक्रिय, जिज्ञासु, चिंतनशील बनाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षण शास्त्रीय अपेक्षाओं में आगे बढ़ते हुए संकल्पनात्मक समझ, आलोचनात्मक चिंतन, दक्षता विकास, अनुभवात्मक अधिगम, समस्या समाधान एवं रचनात्मकता को महत्व देती है। साथ ही इस शिक्षण दृष्टिकोण के अनुरूप आकलन व्यवस्था में भी अपेक्षित परिवर्तन करते हुए परख (परफॉर्मेंस असेसमेंट रिव्यू एंड एनालिसिस ऑफ नॉलेज फॉर हॉलिस्टिक डेवलपमेंट) की स्थापना की गई है, जो शिक्षार्थी की समझ, तर्क, विश्लेषण, समस्या समाधान अनुप्रयोग एवं सृजनशीलता की क्षमता को सामने ला सके। इस प्रकार का समग्र आकलन ही टैगोर की आनंद पूर्ण अधिगम की अवधारणा को वास्तविक रूप से साकार कर सकती है।

वर्तमान समय में सबसे बड़ी आवश्यकता केवल नई शिक्षण तकनीक को अपनाना मात्रा नहीं है बल्कि कक्षा की शिक्षण संस्कृत में अपेक्षित परिवर्तन लाना है। किसी भी शिक्षण विधि को अपने से पूर्व यह प्रश्न पूछे जाने की आवश्यकता है कि क्या अपनी जाने वाली विधि शिक्षार्थी को सक्रिय, जिज्ञासु, चिंतनशील एवं रचनात्मक बनाने में सक्षम है। यदि भारत का भाग्य वास्तव में उसकी कक्षाओं में आकर ले रहा है, तो आज की कक्षा में अपनाया गया प्रत्येक शिक्षण शास्त्रीय निर्णय भविष्य के भारतीय नागरिक के विचार, चरित्र और व्यक्तित्व को प्रभावित करेगा।

संदर्भ सूची

फेरे पॉल, (1970), पेडागोजी ऑफ ऑपरेस्ड, न्यू यॉर्क।

डीवी जॉन, (1938), एक्सपीरियंस एंड एजुकेशन, न्यू यॉर्क

भारत सरकार,कोठारी आयोग रिपोर्ट, नई दिल्ली

भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली

गांधी एम के, बुनियादी शिक्षा (नई तालीम)

टैगोर रविंद्रनाथ, शिक्षा संबंधी निबंध।